होम्योपैथिक से बड़ी से बड़ी बीमारी का इलाज भी हो सकता है

डॉ. अमर निकम से बातचीत

'आदित्य होम्योपैथिक हॉस्पिटल, पिंपरी गांव में 50 बैड्स का एक हॉस्पिटल है। यहां पर ज्यादातर मरीज किडनी फेल और कैंसर की बीमारी से त्रस्त हैं। होम्योपैथिक की एक छोटी-सी गोली इतनी बड़ी बीमारी में क्या आराम देगी? अस्पताल के डॉ. अमर निकम से पूछती हूँ तो वह हंस देते हैं फिर कहले लगे - 'बिना किसी कड़ुवी दवाई और बिना किसी इंजेक्शन या सलाइन के यह छोटी-सी गोली दर्द से तड़पते मरीजों को बिना किसी सर्जरी के आराम देती है जो केवल होम्योपैथिक इलाज से संभव हुआ है।

अपने बचपन की एक घटना का जिक्र करते हुए डा. अमर बोले, मेरे पांव में कांटा चुभ गया था जिसे निकालते वक्त मुझे बहुत दर्द हुआ था। दूसरी बार जब मेरे पैर में कांटा चुभा तो मैं अपने पहले के अनुभव से डर गया और अपने पिता से दवा मांगने लगा। वह यहां पिंपरी में 1961 से होम्योपैथिक की प्रेक्टिस कर रहे थे। उन्होंने मुझे इसके लिए होम्योपैथिक की गोलियां दीं। कुछ ही देर में मेरा दर्द गायब हो गया। यह अनुभव ही था कि मेरा ज़ीवन इस क्षेत्र को समर्पित है।

• होम्योपैथिक इलाज पर लोगों का ज्यादा भरोसा नहीं है?

- रिजल्ट देनेवाले डाक्टरों की कमी इसकी वजह है। होम्योपैथिक के नियम के विपरीत दवा योजना करने से डाक्टरों को इसके रिजल्ट नहीं मिलते। इसके नियम के अनुकूल एक मरीज को एक बार में सिर्फ एक दवा देनी चाहिए। जबकि होता ये है कि दस-दस दवाइयां दे दी जाती हैं। होम्योपैथिक कॉलेजों में अच्छे प्रशिक्षकों की कमी के कारण भी काबिल डाक्टर नहीं तैयार हो रहे। डॉ. निकल पिछले दस सालों से हॉस्पिटल चला रहे हैं। इसके पहले वह चाकण के पास एक छोटे से गांव बहुर में 4-5 साल होम्योपैथिक की प्रेक्टिस कर रहे थे। पिंपले सौदागर में भी

उनकी क्लिनिक कुछ साल रही। अपने घर में ही बिल्डिंग के तीन मजलों पर उनके मरीज लेटे हुए हैं। होम्योपैथिक के इस अस्पताल ने पूरे भारत में अपनी एक पहचान बनाई है। वह इसलिए भी कि होम्योपैथिक का हॉस्पिटल इसके अलावा पूरे भारत में कहीं नहीं है। जर्मनी जो होम्योपैथिका का उद्गम स्थल है वहां भी इसका हॉस्पिटल नहीं है।

• होम्योपैथिक के डाक्टर की क्या विशेषता होनी चाहिए?

- होम्योपैथिक में 5-6 हजार दवाइयां हैं। मर्ज को पहचान कर एक ही दवा कम मात्रा में देकर पहले उसका रिजल्ट मालूम कर लेने के बाद डाक्टरों को मरीज के इलाज की योजना बनानी चाहिए। डॉ. निकम ने दस सालों में करीब छः सौ छात्रों को मुफ्त प्रशिक्षित किया है। हर महीने उनका एक घूमता मोबाइल कैम्प मुफ्त में गरीबों और यात्रियों को अपनी सेवा देता है। पंढरपूर के यात्रियों के लिए दो-दो दिन का कैम्प भी इन्होंने किया जिसमें 50-60 डाक्टरों का जत्था इनके साथ था। कुंभ मेला नासिक में भी एक 40 दिन का इनका कैम्प लगा था और अमरनाथ यात्रा में अब 11 दिनों का

आपके अनुसार क्या पावर काम करती है, उसका ज्ञान, उसकी मेहनत, उसका सेवाभाव या कोई अदृश्य शक्ति?

- मैं ईश्वर को बहुत मानता हूँ। मरीज के रूप में मुझे हर घड़ी उस अदृश्य शक्ति का एहसास होता है और मैं अक्सर यह सोचा करता हूं कि भौतिक जगत में किसी भी मनुष्य के शरीर का यदि एक भी अंग बिगड़ा तो उसे ठीक करने में लाखों रुपयों का खर्चा आता है। इस हिसाब से एक व्यक्ति को सेहतमंद रखने में उस ईश्वर का कितना खर्चा आता होगा? मानव शरीर की कद्र डाक्टरों और मरीजों को होती है आम आदमी इस एहसास से अछूते हैं।

इनका पता
आदित्य होम्योपैथिक हॉस्पिटल
'वैशाली निवास' पिंपरीगांव,
पुणे - 411 017.